

Bihar Board Class 12 English Notes Chapter 6 The artist

SHIGA NAOYA (1883-1971) is a celebrated Japanese short story writer of the twentieth century. He wrote very sensitively about his people and their culture. 'The Artist' unfurls before us the world of a talented Japanese boy, Seibei. It shows how the adult world often causes damage to such talents.

शिगा नाओया (1883-1971) बीसवीं सदी के एक प्रसिद्ध जापानी लघु कथाकार हैं। उन्होंने अपने लोगों और उनकी संस्कृति के बारे में बहुत संवेदनशील तरीके से लिखा। 'कलाकार हमारे सामने एक प्रतिभाशाली जापानी लड़के, सेबेई की दुनिया को उजागर करता है। यह दिखाता है कि कैसे वयस्क दुनिया अक्सर ऐसी प्रतिभाओं को नुकसान पहुंचाती है।

THE ARTIST

Paragraph 1. Seibei's parents knew that he often went out to buy himself gourds. He got them for a few sen and soon had a sizeable collection. When he came home, he would first bore a neat hole in the top of the gourd and extract the seeds. Next he applied tea-leaves to get rid of the unpleasant gourd smell. He then fetched the sake which he had saved up from the dregs in his father's cup and carefully polished the surface.

Paragraph 2. Seibei was passionately interested in gourds. One day as he was strolling along the beach, absorbed in his favourite subject, he was startled by an unusual sight: he caught a glimpse of the bald, elongated head of an old man hurrying out of one of the huts by the beach. 'What a splendid gourd!' thought Seibei. The old man disappeared from sight, wagging his bald pine pate. Only then did Seibei realize his mistake and he stood there laughing loudly to himself. He laughed all the way home.

Paragraph 3. Whenever he passed a grocery, a curio-shop, a confectioner's or in fact any place that sold gourds, he stood for minutes on end, his eyes glued to the window appraising the precious fruit.

पैराग्राफ 1. सेबेई के माता-पिता जानते थे कि वह अक्सर लौकी खरीदने के लिए बाहर जाता था। उन्होंने उन्हें कुछ सेन के लिए प्राप्त किया और जल्द ही उनके पास एक बड़ा संग्रह था। जब वह घर आता, तो सबसे पहले लौकी के ऊपर एक साफ सुथरा छेद करता और उसके बीज निकालता। इसके बाद उन्होंने करेले की अप्रिय गंध से छुटकारा पाने के लिए चाय-पत्ती लगाई। उसके बाद उसने अपने पिता के प्याले के मैल से बचाई हुई खातिरदारी की और सतह को सावधानी से पॉलिश किया।

पैराग्राफ 2. सेबेई को लौकी में बहुत दिलचस्पी थी। एक दिन जब वह समुद्र तट पर टहल रहा था, अपने पसंदीदा विषय में लीन था, तो वह एक असामान्य दृष्टि से चौंक गया: उसने एक बूढ़े व्यक्ति के गंजे, लम्बे सिर की एक झलक समुद्र तट की एक झोपड़ी से बाहर निकलते हुए देखी। 'क्या शानदार लौकी है!' सेबेई ने सोचा। बूढ़ा अपने

गंजे चीड़ के पाट को हिलाते हुए दृष्टि से गायब हो गया। तभी सेबेई को अपनी गलती का अहसास हुआ और वह वहीं खड़ा होकर अपने आप पर जोर-जोर से हंस रहा था। वह पूरे घर में हँसा।

पैराग्राफ 3. जब भी वह किसी किराने की दुकान, किसी हलवाई की दुकान या वास्तव में लौकी बेचने वाली किसी भी जगह से गुजरता, तो वह मिनटों तक खड़ा रहता, उसकी आँखें कीमती फल का मूल्यांकन करते हुए खिड़की से चिपक जाती थीं।

Paragraph 4. Seibei was twelve years old and still at primary school. After class, instead of playing with the other children, he usually wandered about the town looking for gourds. Then in the evening he would sit cross-legged in the corner of the living-room working on his newly acquired fruit. When he had finished treating it, he poured in a little sake, inserted a cork stopper which he had fashioned himself, wrapped it in a towel, put this in a tin especially kept for the purpose and finally placed the whole thing in the charcoal footwarmer. Then he went to bed.

Paragraph 5. As soon as he woke the next morning, he would open the tin and examine the gourd. The skin would be thoroughly damp from the overnight treatment. Seibei would gaze adoringly at his treasure before tying a string round the middle and hanging it in the sun to dry. Then he set out for school.

Paragraph 6. Seibei lived in a harbour town. Although it was officially a city, one could walk from one end to the other in a matter of twenty minutes. Seibei was always wandering about the streets and had soon come to know every place that sold gourds and to recognise almost every gourd on the market.

पैराग्राफ 4. सेबेई बारह साल का था और अभी भी प्राथमिक विद्यालय में था। कक्षा के बाद, अन्य बच्चों के साथ खेलने के बजाय, वह आमतौर पर लौकी की तलाश में शहर में घूमता रहता था। फिर शाम को वह अपने नए अर्जित फल पर काम कर रहे रहने वाले कमरे के कोने में क्रॉस लोगड बैठता। जब उसने इसका इलाज करना समाप्त कर दिया, तो उसने थोड़ी सी खातिर डाली, एक कॉर्क स्टॉपर डाला, जिसे उसने खुद बनाया था, उसे एक तौलिया में लपेटा, इसे विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए रखे टिन में डाल दिया और अंत में पूरी चीज को चारकोल फुटवार्मर में रख दिया। . फिर वह सोने चला गया।

पैराग्राफ 5. अगली सुबह जैसे ही वह उठता, वह टिन खोलकर उसकी जांच करता

लौकी रात भर के उपचार से त्वचा पूरी तरह से नम हो जाएगी। बीच में एक तार बांधने और उसे धूप में सूखने के लिए लटकाने से पहले सेबेई अपने खजाने को निहारता था। फिर वह स्कूल के लिए निकल पड़ा।

पैराग्राफ 6. सेबेई एक बंदरगाह शहर में रहता था। हालाँकि यह आधिकारिक तौर पर एक शहर था, फिर भी बीस मिनट में एक छोर से दूसरे छोर तक चल सकता था। सेबेई हमेशा सड़कों पर घूमता रहता था और जल्द ही उसे हर उस जगह का पता चल जाता था जहाँ लौकी बेची जाती थी और बाजार में लगभग हर लौकी को पहचान लिया जाता था।

Paragraph 7. He did not care much about the old, gnarled, peculiarly-formed gourds usually favoured by collectors. The type that appealed to Seibei was even and symmetrical.

Paragraph 8. “That youngster of yours only seems to like the ordinary-looking ones,” said a friend of his father, who had come to call. He pointed at the boy, who was sitting in the corner busily polishing a plain, round gourd.

Paragraph 9. “Fancy a lad spending his time playing around like that with gourds!” said his father giving Seibei a disgusted look.

Paragraph 10. “See here, Seibei my lad,” said the friend, ‘there’s no use just collecting lots of those things. It’s not the quantity that counts, you know. What you want to do is to find one or two really unusual ones.’

Paragraph 11 ‘I prefer this kind,’ said Seibei and let the matter drop.

Paragraph 12 Seibei’s father and his friend started talking about gourds.

Paragraph 13 “Remember that Bakin gourd they had at the agricultural show last spring?” said his father. ‘It was a real beauty, wasn’t it?’

Paragraph 14 “Yes, I remember. That big, long one ...’

Paragraph 15 As Seibei listened to their conversation, he was laughing inwardly. The Bakin gourd had made quite a stir at the time, but when he had gone to see it (having no idea, of course, who Bakin might be) he had found it rather a stupid-looking object and had walked out of the show.

पैराग्राफ 7. उन्होंने पुराने, नुकीले, अजीबोगरीब रूप से गठित लौकी के बारे में ज्यादा परवाह नहीं की, जो आमतौर पर संग्राहकों द्वारा पसंद की जाती थी। सेबेई को जो प्रकार पसंद आया वह सम और सममित था।

पैराग्राफ 8. “तुम्हारा वह नौजवान साधारण दिखने वाले लोगों को ही पसंद करता है,” उसके पिता के एक दोस्त ने कहा, जो फोन करने आया था। उसने उस लड़के की ओर इशारा किया, जो कोने में बैठा एक सादा, गोल लौकी पॉलिश कर रहा था।

पैराग्राफ 9. “लौकी के साथ इस तरह खेलते हुए अपना समय बिताने वाले लड़के की कल्पना करें!” उसके पिता ने सेबेई को घृणित दृष्टि देते हुए कहा।

पैराग्राफ 10. “यहाँ देखिए, सेबेई माय लाड,” दोस्त ने कहा, ‘उन चीजों को इकट्ठा करने का कोई फायदा नहीं है। यह वह मात्रा नहीं है जो मायने रखती है, आप जानते हैं। आप जो करना चाहते हैं वह यह है कि एक या दो वास्तव में असामान्य खोजें।’

पैराग्राफ 11 ‘मैं इस तरह की पसंद करता हूँ,’ सेबेई ने कहा और मामले को छोड़ दें।

पैराग्राफ 12 सेबेई के पिता और उसके दोस्त लौकी के बारे में बात करने लगे।

पैराग्राफ 13 “याद रखें कि पिछले वसंत में कृषि शो में उनके पास लौकी थी? उनके पिता ने कहा। ‘यह एक वास्तविक सुंदरता थी, है ना?’

पैराग्राफ 14 “हाँ, मुझे याद है। वह बड़ा, लंबा वाला...”

अनुच्छेद 15 जब सेबेई ने उनकी बातचीत सुनी, तो वह अंदर ही अंदर हंस रहा था। उस समय लौकी ने काफी हलचल मचाई थी, लेकिन जब वह इसे देखने गया था (बिल्कुल पता नहीं, लेकिन कौन हो सकता है) तो उसने इसे एक बेवकूफ दिखने वाली वस्तु के बजाय पाया और शो से बाहर चला गया था। .

Paragraph 16 “I didn’t think so much of it,” interrupted Seibei, ‘It’s just a clumsy great thing.’

Paragraph 17. His father opened his eyes wide in surprise and anger.

Paragraph 18 “What’s that?” he shouted. “When you don’t know what you’re talking about, you’d better shut up!

Seibei did not say another word.

Paragraph 19 One day when he was walking along an unfamiliar back-street, he came upon an old woman with a fruit-stall. She was selling dried persimmons and oranges; on the shutters of the house behind the stall, she had hung a large cluster of gourds.

Paragraph 20 “Can I have a look?” said Seibei and immediately ran behind the stall and began examining the gourds. Suddenly he caught sight of one which was about five inches long and at first sight looked quite commonplace. Something about it made Seibei’s heart beat faster.

Paragraph 21 How much is this one?’ he asked, panting out the words.

Paragraph 22 ‘Well,’ said the old woman, “since you’re just a lad, I’ll let you have it for ten sen.’

Paragraph 23 ‘In that case,’ said Seibei urgently, please hold it for me, won’t you?’ I’ll be right back with the money.’

Paragraph 24 He dashed home and in no time at all was back at the stall. He bought the gourd and took it home.

Paragraph 25 From that time on, he was never separated from his new gourd. He even took it along to school and used to polish it under his desk in class-time. It was not long before he was caught at this by one of the teachers, who was particularly incensed because it happened to take place in an ethics class.

पैराग्राफ 16 “मैंने इसके बारे में इतना नहीं सोचा,” सेबेई ने कहा, ‘यह सिर्फ एक अनाड़ी बड़ी बात है।’

अनुच्छेद 17. उसके पिता ने आश्चर्य और क्रोध में अपनी आँखें खोल दीं।

अनुच्छेद 18 “वह क्या है?” वह चिल्लाया। “जब आप नहीं जानते कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप चुप रहें!”

सेबेई ने एक और शब्द नहीं कहा।

अनुच्छेद 19 एक दिन जब वह एक अपरिचित पिछली सड़क पर चल रहा था, तो वह एक बूढ़ी औरत के पास एक फल-स्टॉल लेकर आया। वह सूखे खुरमा और संतरे बेच रही थी; उसने दुकान के पीछे घर के शटर पर लौकी का एक बड़ा गुच्छा लटका दिया था।

अनुच्छेद 20 “क्या मैं देख सकता हूँ?” सेबेई ने कहा और तुरंत स्टाल के पीछे भागा और लौकी की जांच करने लगा। अचानक उसकी नज़र एक पर पड़ी जो लगभग पाँच इंच लंबी थी और पहली नज़र में काफी सामान्य लग रही थी। इसके बारे में कुछ ने सेबेई के दिल की धड़कन तेज कर दी।

अनुच्छेद 21 यह कितने का है?’ उसने शब्दों को थपथपाते हुए पूछा।

पैराग्राफ 22 ‘ठीक है,’ बूढ़ी औरत ने कहा, “चूंकि तुम सिर्फ एक लड़के हो, मैं तुम्हें इसे दस सेन के लिए रखने दूँगा।’

पैराग्राफ 23 ‘उस मामले में,’ सेबेई ने तत्काल कहा, कृपया इसे मेरे लिए पकड़ो, है ना?’ मैं पैसे लेकर वापस आऊँगा।’

पैराग्राफ 24 वह घर से निकल गया और कुछ ही समय में वापस स्टॉल पर आ गया। वह लौकी खरीद कर घर ले आया।

पैराग्राफ 25 उस समय के बाद से वह अपनी नई लौकी से कभी अलग नहीं हुए। वह उसे स्कूल भी साथ ले जाता था और क्लास-टाइम में उसे अपने डेस्क के नीचे पॉलिश करता था। यह बहुत पहले नहीं था जब वह इस पर शिक्षकों में से एक द्वारा पकड़ा गया था, जो विशेष रूप से नाराज था क्योंकि यह एक नैतिकता वर्ग में हुआ था।

Paragraph 26 The teacher came from another part of Japan and found it most offensive that children should indulge in such effeminate pastimes as collecting gourds. He never minded having his students sing Naniwabushi ballads, however raucously. Now, when he found Seibei silently polishing his gourd, his voice trembled with fury.

Paragraph 27 “You’re an idiot!” he shouted. “There’s absolutely no future for a boy like you.’ Then and there he confiscated the gourd on which Seibei had spent so many long hours of work. Seibei stared straight ahead and did not cry.

Paragraph 28 When he got home, Seibei’s face was pale. Without a word, he put his feet on the warmer and sat looking blankly at the wall.

Paragraph 29 After a while, the teacher arrived. As Seibei’s father was not yet home from the carpenter’s shop where he worked, the teacher directed his attack on Seibei’s mother.

Paragraph 30 “This sort of thing is the responsibility of the family, he said in a stern voice it is the duty of you parents to see that such things don't happen in an agony of embarrassment, Seibe's mother muttered some apology.

अनुच्छेद 26 शिक्षक जापान के दूसरे हिस्से से आए थे और उन्हें यह सबसे अधिक आपत्तिजनक लगा कि बच्चों को लौकी इकट्ठा करने जैसी पवित्र लीलाओं में लिप्त होना चाहिए। उन्होंने कभी भी अपने छात्रों से नानीवाबुशी गाथागीत गाए जाने पर ध्यान नहीं दिया, हालांकि कर्कश स्वर में। अब, जब उसने सेबेई को चुपचाप अपनी लौकी को पॉलिश करते हुए पाया, तो उसकी आवाज गुस्से से कांप उठी।

अनुच्छेद 27 “तुम मूर्ख हो!” वह चिल्लाया। “तुम जैसे लड़के का कोई भविष्य नहीं है।” फिर वहीं उसने उस लौकी को जल कर लिया जिस पर सेबेई ने इतने लंबे समय तक काम किया था। सेबेई सीधे आगे देखता रहा और रोया नहीं।

अनुच्छेद 28 जब वह घर पहुंचा, तो सेबेई का चेहरा पीला पड़ गया था। एक शब्द के बिना, उसने अपने पैर गरमागरम पर रख दिए और दीवार को खाली देख कर बैठ गया।

पैराग्राफ 29 थोड़ी देर बाद शिक्षक पहुंचे। चूंकि सेबेई का फेटनर बढ़ई की दुकान से अभी तक घर नहीं आया था, जहां उसने काम किया था, टेन्चर ने सेबेई की मां पर अपने हमले का निर्देश दिया।

पैराग्राफ 30 “इस तरह की बात परिवार की जिम्मेदारी है, उन्होंने कठोर आवाज में कहा कि यह आप माता-पिता का कर्तव्य है कि थर्ड ऐसी चीजें देखें जो शर्मिंदगी की पीड़ा में होती हैं, सेबेई की मां ने कुछ माफी मांगी।

Paragraph 31 Meanwhile, Seibe was trying to make himself as inconspicuous as possible in the corner. Terrified, he glanced up at his vindictive teacher and at the wall directly behind, where a whole row of fully prepared gourds 'vas hanging. What would happen if the teacher caught sight of them?

Paragraph 32 Trembling inside, he waited for the worst, but at length the ilan exhausted his rhetoric and stamped angrily out of the house. Seibe heaved a sigh of relief.

Paragraph 33 Seibe's mother was sobbing softly. In a querulous whine, she began to scold him, and in the midst of this, Seibe's father returned from his shop. As soon as he heard what had happened, he grabbed his son by the collar and gave him a sound beating. *You're no good!' he bawled at him. “You'll never get anywhere in the world, the way you're carrying on. I've a good mind to throw you out into the street where you belong!” The gourds on the wall caught his attention. Without a word, he fetched his hammer and systematically smashed them to pieces, one after the other. Seibe turned pale but said nothing.

Paragraph 34 The next day the teacher gave Seibe's confiscated gourd to an old porter who worked in the school. ‘Here, take this,’ he said, as if handing over some unclean object. The porter took the gourd home with him and hung it on the wall of his small, sooty room.

Paragraph 35 About two months later, the porter, finding himself even more fiard-pressed for money than usual, decided to take the gourd to a local curio-shop to see if he could get a few coppers for it. The curio-dealer examined the gourd carefully, then assuming an quinterested ione handed it back to the porter, saying, 'Imight give you five yen for it.

Paragraph 36 The porter was astounded, but being quite an astute old man, replied coolly, 'I certainly wouldn't part with it for that.' The dealer immediately raised his offer to ten! yen, but the porter was still adamant.

अनुच्छेद 31 इस बीच, सेबेई कोने में खुद को जितना संभव हो उतना अगोचर बनाने की कोशिश कर रहा था। भयभीत होकर, उसने अपने प्रतिशोधी शिक्षक और सीधे पीछे की दीवार पर नज़र डाली, जहाँ पूरी तरह से तैयार लौकी की एक पूरी पंक्ति लटकी हुई थी। क्या होगा अगर शिक्षक ने उन्हें देखा?

अनुच्छेद 32 अंदर कांपते हुए, वह सबसे बुरे की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन अंत में इलान ने अपनी बयानबाजी को समाप्त कर दिया और घर से बाहर गुस्से में मुहर लगा दी। सेबेई ने राहत की सांस ली।

अनुच्छेद 33 सेबेई की माँ धीरे से रो रही थी। एक अजीब कराह में, उसने उसे डांटना शुरू कर दिया, और इस बीच, सेबेई के पिता अपनी दुकान से पीछे हट गए। जैसे ही उसने सुना कि क्या हुआ था, उसने अपने बेटे को कॉलर से पकड़ लिया और उसे एक आवाज दी। *तुम अच्छे नहीं हो!* उसने उस पर चिल्लाया। "आप दुनिया में कहीं भी नहीं पहुंचेंगे, जिस तरह से आप आगे बढ़ रहे हैं। मैं तुम्हें उस गली में फेंक देना चाहता हूँ जहाँ तुम हो!" दीवार पर लगे लौकी ने उसका ध्यान खींचा। एक शब्द के बिना, उसने अपना हथौड़ा लाया और व्यवस्थित रूप से उन्हें एक के बाद एक टुकड़े-टुकड़े कर दिया। सेबेई पीला पड़ गया लेकिन कुछ नहीं बोला।

पैराग्राफ 34 अगले दिन शिक्षक ने स्कूल में काम करने वाले एक बूढ़े कुली को सेबेई की जब्त लौकी दे दी। 'यहाँ, इसे ले लो,' उसने कहा, मानो किसी अशुद्ध वस्तु को सौंप रहा हो। कुली लौकी को अपने साथ घर ले गया और उसे अपने छोटे, कालिख वाले कमरे की दीवार पर लगा दिया।

अनुच्छेद 35 लगभग दो महीने बाद, कुली ने खुद को सामान्य से अधिक पैसे के लिए दबाया, यह देखने के लिए कि क्या उसे इसके लिए कुछ तांबे मिल सकते हैं, लौकी को एक स्थानीय क्यूरियो-शॉप में ले जाने का फैसला किया। क्यूरियो-डीलर ने ध्यान से लौकी की जांच की, फिर एक उत्सुक आयन मानकर कुली को यह कहते हुए वापस सौंप दिया, 'मैं आपको इसके लिए पांच येन दे सकता हूँ।

अनुच्छेद 36 कुली चकित था, लेकिन काफी चतुर बूढ़ा आदमी होने के नाते, शांतता से उत्तर दिया, 'मैं निश्चित रूप से इसके लिए भाग नहीं लूंगा।' डीलर ने तुरंत अपना प्रस्ताव दस तक बढ़ा दिया! येन, लेकिन कुली अभी भी अडिग था।

Paragraph 37 In the end the curio-dealer had to pay fifty yen for the gourd. The porter left the shop, delighted at his luck. It wasn't often that the teachers gave one a free gift equivalent to a year's wages! He was so clever as not to mention the matter to anyone, and neither Seibei nor the teacher ever heard what had happened to the gourd. Yes, the porter was clever, but he was not clever enough: little did he imagine that this same gourd would be passed on by the curio-dealer to a wealthy collector in the district for 600 yen.

Paragraph 38 Seibei is now engrossed in his pictures. He no longer feels any bitterness either towards the teacher, or towards his father who smashed all his precious gourds to pieces.

Paragraph 39 Yet gradually his father has begun to scold him for painting pictures.

अनुच्छेद 37 अंत में जिज्ञासु को लौकी के लिए पचास येन का भुगतान करना पड़ा। कुली अपनी किस्मत से खुश होकर दुकान से चला गया। ऐसा अक्सर नहीं होता था कि शिक्षक एक साल के वेतन के बराबर एक मुफ्त उपहार देते थे! वह इतना चतुर था कि किसी को भी इस बात का जिक्र नहीं करता था, और न तो सेबेई और न ही शिक्षक ने कभी सुना कि लौकी को क्या हुआ था। हां, कुली होशियार था, लेकिन वह काफी चालाक नहीं था: उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि यह वही लौकी क्यूरियो-डीलर द्वारा जिले के एक धनी कलेक्टर को 600 येन में दी जाएगी।

पैराग्राफ 38 सेबेई अब उनकी तस्वीरों में तल्लीन है। वह अब न तो शिक्षक के प्रति, या अपने पिता के प्रति कोई कटुता महसूस करता है, जिसने उसकी सभी कीमती लौकी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

पैराग्राफ 39 फिर भी धीरे-धीरे उनके पिता ने उन्हें चित्र बनाने के लिए डांटना शुरू कर दिया।